DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-3 ,UNIT-7,
MEANING AND TYPES OF MOOD DISORDER
LECTURE-70

LECTURE-69 का शेष भाग

बाईपोलर विकृति (bipolar disorder)

बाईपोलर विकृति वैसी विकृति को कहा जाता है जिसमे व्यक्ति या रोगी में बारी-बारी से विषाद तथा उन्माद दोनों ही तरह की आवश्यकताएँ होती पायी जाती है |यही कारण है की उसे उन्मादी विषादी विकृति (manic-depressive disorder)भी कहा जाता है |

DSM-IV (TR) में बाईपोलर विकृति के निम्नांकित तीन प्रकार बतलाये गए है –

(i) साइक्लोथाइमिक विकृति (cyclothymic disorder)- डायस्थाइमिक विकृति के समान साइक्लोथाइमिक विकृति में भी मनोदशा में चिरकालिक क्षुब्धता पायी जाती है |इसमें विषादी व्यवहार तथा अल्पोंमादी व्यवहार दोनों ही पाये जाते है परन्तु इन दोनों में से किसी की भी गंभीरता ऐसी नहीं होती है कि वह DSM-IV द्वारा निर्धारित कसौटी को छू सके |ऐसे व्यवहारों का इतिहास निश्चित रूप से कम-से-कम दो वर्ष पुराना अवश्य होता है |

(ii) बाईपोलर एक विकृति (BIPOLAR I DISORDER)-बाईपोलर एक विकृति ,जैसा की नाम से ही स्पष्ट है,वैसी मानसिक विकृति होती है जिसमे रोगी या व्यक्ति एक या एक से अधिक उन्माद की घटना तथा एक या एक से अधिक विषाद की घटना की अनुभूति अवश्य ही किया होता है |गुडविन तथा जैमिसन (1987)के अनुसार बाईपोलर एक विकृति के बहुत कम रोगी ऐसे भी होते है जो एक या एक से अधिक बार उन्मादी अवस्था का अनुभव किये हो परन्तु उन्हें कभी भी विषादी लक्षण का अनुभव नहीं हुआ है |

(iii) बाईपोलर दो विकृति (BIPOLAR II DISORDER)-बाईपोलर दो विकृति वैसी मानसिक विकृति होती है जिसमे रोगी को कम-से-कम एक अल्पोंमादी मानसिक अवस्था का अनुभव तथा एक या एक से अधिक विषादी मानसिक अवस्थाओं का अनुभव हो चूका होता है |इसके रोगी को कभी उन्मादी मानसिक अवस्था का अनुभव नहीं होता है |अल्पोंमादी अवस्था एक ऐसी अवस्था होती है जिसमे व्यक्ति की मनोदशा थोड़े देर के लिए बढ़ी-चढ़ी होती है ,तथा उनमे चिड़चिड़ापन जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है परन्तु उनका सामाजिक एवं व्यावहारिक कार्य पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है तथा ऐसे व्यक्ति को मानसिक अस्पताल में भर्त्ती करवाकर उपचार करवाना भी आवश्यक नहीं होता है |

बाईपोलर एक विकृति तथा बाईपोलर दो विकृति में मुख्य अंतर यह है की बाईपोलर दो विकृति में उन्मादी व्यवहार की गंभीरता कम होती है जबकि बाईपोलर एक विकृति में उन्मादी व्यवहार व्यक्ति अधिक गंभीर मात्रा में दिखलाता है |

(3) अन्य मनोदशा विकृति (OTHER MOOD DISORDER)-इस श्रेणी में वैसी मनोदशा विकृतियों को रखा गया है जो दैहिक एवं मानसिक विकृतियों से उत्पन्न हो जाते है |जैसे ,क्लिंटन (1993) के अध्ययन के अनुसार प्रत्येक 10 मुख्य विषादी विकृति में से एक का कारण मनोवैज्ञानिक या सांवेगिक न होकर कोई मेडिकल बीमारी जैसे कैंसर ,मधुमेह ,ह्रदय आघात आदि या कुछ द्रव्य दुरुपयोग या अन्य विकृतियों के उपचार के लिए लिया जाने वाला औषध आदि होता है |